गुलाबी. कैमिकल नेल पालिश

(1) देर दोपहरी फुल्ला ने साक्षात उर्वशी को देखा. उसके मंदिर की सीढ़ियों को चढ़ते हुए। फुल्ला का बसेरा सीढ़ियों के एक तिहाई पर था। वहाँ बैठे सीढ़ियाँ आसमान की ओर बढ़ती एक नदी जैसी दिखती थीं, जो ऊपर जाते जाते पतली होने लगती है। और आज उस नदी की सतह पर उड़ती तैरती एक अद्भुत मछली ऊपर की ओर बढ़ रही थी। वह 11-12 साल की लड़की थी। उसके नम चेहरे की सुर्खी तारों में गहनों की रोशनी थी। सुनहरी काया पर सिंदूर और मोगरों की कुंदन थी। लम्बी पलकों से सीढ़ियों को झाड़ते हुए, वह आँखें हर अन्य वस्तु की तरह फुल्ला को भी बिना देखे, उसपर से गुज़र गईं। जब वह लौटी देखते ही फुल्ला को सहला गई, तो फुल्ला की आँखों ने स्वीकार झट से मुँह फेर लिया। और उसके बगल में खड़ी मछली की माँ को देखा। माँ का चेहरा टूटे टीलों पर धूप सा सूखा था, जैसे उसकी सारी नदी कोई पी गई हो। उर्वशी की हथ-

~~चिकने~~ कोमल और निर्मल थे, माँ के
एक कारीगर के व्याकुल हाथ थे। अपनी
इस एक कृति को बनाने में माँ अपनी
तस्वीर का ढाँचा भर रह गई थी। इसके
आस पास उस आकाश का बादल था, चेहरे
पर भी अभाव का डर था। पर छवि
उर्वशी के हाथ में था। और उड़ने की
तमन्ना थी।
माँ पर से दौड़ते हुए,
कुल्ला की नज़र उसके हाथों को छूते जब वापस
बेटी पर आई, तो उसके अन्दर ही अन्दर
एक आसमान धरती के ऊपर गुरबत सा
फूलने लगा। ~~एक~~ एक ~~हरी अंधेरी~~ ~~गहरी~~ हरे
काटी झाड़ पे अचानक आग लग गई
और कुल्ला झुलस गई। उसकी मोटी उँगलियाँ
फूलों को चुनती रहीं, आँखों में भी कुछ
नहीं बदला। वह लड़की ~~कुल्ला~~ उसके बगल से
गुज़र गई। उसके गोरे और तेल की
ख़ुशबू में लिपटा तन कल्ला ने
भूल कर अपने आँगन को झाँकते देखा।
माँ शाम का चूल्हा जला रही थी, धीरे
धीरे। कि कहीं। सुलगी नींद न टूट जाए,
तीसको उसने इस दिन से मोड़ रखा

था, जबके कोटी मारी फुलेमालाएं बनाने लगी। (इस मन्दिर की कामों की भी परम्परा थी।)

नदी की सीढ़ियाँ उस लहर के बाद फिर पत्थर बन गई थीं। शाम आती कोठरी लगा कर रख कुछ थे तन गई खिल्ली थी थी टकटकी सीधी धूप को और आंगन नाप रही थी। लगता था शाम के आंगन नाप कर दिया है। आँगन के सारे संकेत खाली खाली आँगन जिसपर शाम खाली थी, खाली खिल्ली, खाली थी। बाद तन गई गांठ को लेकर जाती हुई कुल्ला की ओर लगी खोखले पांव दुखते थे।

खाली थी। पर लालटेन (?) दरियाँ कथावाचक अपनी कहानी की रोशनी से खाली दरी को शुरू कर चुका था। … पर कुल्ला यह सोच कर बैठ गई कि कथा फल शाम कहानी उस की ही हो जाए। उसके हाथ के उधार की दुकान से उठाई सिंदूर की पुड़िया थी।

मुरशिद खाली नदी पर हाथ टेके, आसमान को देख रहा था कि : बादल छितरे चाँद पर बढ़ रहे थे। मुरशिद ने आँखें मूँदीं ~~अलग अलग~~ सिक्कों की तरह तस्वीरें आँखों के पीछे गिरने लगीं। टूटी हुई paintings की तरह – Baroda का थोड़ा-Sir Griffith corridor में खड़े हैं। आज आँगन में माँ ने एक छोटा बच्चा गोद लिया जैसे कह रही हो 'तुम्हारा'। ~~कैसी~~ [illegible] कमला खड़ी है। छोर पर के कंधे के पीछे उजलिया नदी की [illegible] मुरशिद को छूने लगी। आँख खुली रेती को काला सा [illegible] का परदा नदी के पार बाला गई। खाली नदी को देखता था।

नदी में मछेरे की strike ~~है~~ नाव वालों की मालिक आप से नाव वालों की एक पहलवान मुरशिद ने भी नदी पार की थी। तो बैठ कर नदी के पीठ पर बैठ गई थी। सामान न होता था। उसे खींच हुई तो वह तैरता। नदी में [illegible] पहलवान के उदासीन अखाड़े के एक गुजरे, बुरी की पीठ पर पंजा खिलखिलाते हुए। तरह से एक औरत ने अपना इसको जोर से मुक्का दिया था, सर पूरी तरह से

युरव्यर ~~उसका~~ ~~देखता~~ ~~देखता~~ ~~रहा~~

कौन होगी ?

कि कोई इस शर्मनाक हालत में उसका

चेहरा न देख पाए।

युरव्यर उसे ताकता रहा - कौन होगी।

मन किया ताँगा को कोई जैसे अपने

पहलवान दर रोड़ी मारे ले 'जल्दी चलो'।

वाकी थी क्या ? खाट पर भी युरव्यर

20 मिनट रुकना रहा, कि अगर औरत

के आनेवाले को पहचान जाए, तो

रात को जानता को पूरा प्रसंग

सुनाएगा। जानता है क्या ?

~~सामने~~ एक ~~जाने वाली मौके का फायदा~~

उठाकर दरी पर पड़ा

सामने एक [illegible] मोटी लड़की एक पुड़िया

में बार बार कुछ टटोल रही थी।

उठाने वाली बिखरी थी, मौके का फायदा

उठाकर पसार कर बैठी थी। उसका

सारा ध्यान अपनी पुड़िया पर था।

पहले सच तो यह था कि आज युरव्यर

का मन भी ताँगा की कहानी में

नहीं लग रहा था। ताँगा के बोल

दरी पार नहीं पहुंच कर पा रहे थे। क्या

सुनने ❋ मैदान पर बाबा की आवाज़
बिखर गई है। मुरव्वर का मन किया
रवि वर्मा की तस्वीर खाट पर लेजा
दे - फिर देखो कितनी भीड़ उमड़
पड़ेगी। वह एकटक अपने पिता को
देखने लगा।

आंगा मांजके कुल्ला पानी को तोड़ते
बीच के मंदिर तक
हुए पानी के मोटी मछली भी
लौटी। वहाँ एक रही और शौक
आसमान को ताकती भी कि
मनाती रही। वह समझ गई है सपने
वह अपने माँ के साधारण इच्छी नहीं
कैद है। इसलिए कभी
बन सकती

मुहिब्बर ने काले कपड़े से अपना
बालों के शीशा महल
चेहरा छुपाकर को देखना चाहा
से अपने बाबा कुर्सी खाली है।
तो पाया कि कुर्सी की कैद छोड़
बाबा ने
दी थी।
उजाला सवेरा आ। मुरव्वर निकली

रात को बाबा को चुपचाप जगाने
की कोशिश में था। उसने अपना
बाबा और अपने बीच में
नया कैमरा रखा था। जिससे वह बाबा
को उतार कर, ~~लेकिन~~ उन तस्वीर को
प्यार करना चाहता था।
बाबा को यह हरकत मंजूर नहीं थी।
न जाने क्यों। ~~लेकिन सँग में खड़े अपने~~ चुपचाप खड़े
~~कैमरा~~ को ~~अपने कैमरे के~~ पकड़े, घूरकर
अपने कैमरे के stand को पायेगा,
को लगा कि वह उसे यहाँ नहीं रख
कहीं और जाना होगा।
उसे उसके साथ